11

कविता भी, कहानी भी

लता अग्रवाल*

बच्चों को कहानी जितना आनंदित करती है, कविता सुनना भी उन्हें उतना ही अच्छा लगता है। कहानी यदि कविता के रूप में बच्चों को सुनायी जाए तो कहानी सुनने का आनंद दोगुना हो जाता है। एक ही कहानी का आनंद दो विधाओं– कविता और कहानी में बच्चों को कैसे दिया जा सकता है, यही इस लेख का विषय है।

साहित्य की समस्त विधाओं में कहानी सबसे प्राचीन विधा है और बच्चों के सबसे करीब भी। नानी, दादी और उनसे भी काफ़ी पहले अनंतकाल पुराना है, कहानी का इतिहास। इसमें संदेह नहीं कि कहानी का नाम लेते ही उद्दंड से उद्दंड बच्चे भी अनुशासित हो जाते है। भावप्रधान होने के कारण यह बच्चों को जीवन से जोड़ती है, उनमें उत्तम गुणों का विकास करती है। छत्रपति शिवाजी, विवेकानंद आदि महापुरुषों के जीवन में कहानी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। शिवाजी की माता जीजाबाई ने उन्हें सदैव उत्तम चरित्र, वीरता एवं देशप्रेम से संबंधित कहानियाँ सुनाकर उनमें मानवीय गुणों का विकास किया।

बदलते समय और परिस्थितियों के अनुरूप व्यक्ति की सोच में भी परिवर्तन होता है। यही कारण है कि समय के साथ कहानी के रूप में परिवर्तन आया। प्राचीन समय में परियों, चंदामामा, देवता, राक्षस, ध्रुव, प्रह्लाद जैसे आदर्श पात्र, जादुई जैसे विषयों पर आधारित कहानी सुनाई जाती थी, ताकि उनकी भावना कोमल और काल्पनिक बनी रहे। उद्देश्य था, बच्चों में सद्भावना, सद्चरित्र आदि गुणों का विकास करना।

अब हम देखें कि वास्तव में कहानी है क्या? साधारण शब्द में कहूँ तो कहानी वास्तव में किस्सा या प्रसंग का ही रूप है, जिसमें कुछ पात्र और उन पात्रों का परस्पर संवाद, उन संवादों को कहने का अनूठा ढंग है, जिसे हम 'कहन' कह सकते हैं। इसी से कहानी शब्द बना है। वास्तव में कहन ही है, जो कहानी को रोचक बनाता है।

कहानी का माध्यम गद्य या पद्य दोनों हो सकते हैं– गद्य में कहानी तो प्रायः सभी बच्चों ने सुनी है, जैसे– चूहे और शेर की कहानी, खरगोश और शेर की कहानी, कौवे की कहानी, बंदर और मगरमच्छ की कहानी, ध्रुव, प्रह्लाद की कहानी। गद्य में कहानी कहने का प्रचलन

* हिंदी प्रवक्ता, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

अधिक है, प्राय: अधिकांश कहानी गद्य में लिखी जाती है, किन्तु अपने कथन को नवीन रूप देने के लिए शिक्षक उसी कहानी को पद्य का रूप देकर नवीनता प्रदान कर सकते हैं।

कहानी पद्य के माध्यम से भी सुनाई जा सकती है, जिसमें कविता और लोरियाँ आती हैं। शिक्षक अपनी बात को नवीन रूप देने के लिए स्वयं कविता में कहानी बुन सकते हैं। यह बच्चों के लिए भी बहुत रोचक होगा। कविता की अपनी विशेषता होती है, कविता में कम शब्दों में बात कहने का प्रयास होता है, लय होती है। बच्चे जो गद्य में कहानी सुन रहे थे, उसी कहानी को कविता के रूप में सुनकर निश्चय ही प्रभावित होंगे।

पद्य में कहानी कहने की परंपरा कम ही सही मगर प्राचीन है। उदाहरण के लिए मैथिलीशरण गुप्त की यह कविता –

'माँ कह एक कहानी
बेटा! समझ लिया क्या तूने
मुझको अपनी नानी .....।'

कविता के माध्यम से भावों को कितने माधुर्य के साथ बच्चों के समक्ष रखा गया है, जो कहानी के समस्त तथ्यों को पूरा करती है। जैसे कि माँ किस तरह अपने बच्चे को सिद्धार्थ के बचपन का यह प्रसंग सुना रही है, जिसमें आदर्श चरित्र, साथ ही अच्छाई और बुराई का द्वंद्व, जिसमें अच्छाई की विजय के माध्यम से बच्चे को जीवन से संबंधित सीख प्रदान करती है।

कविता के माध्यम से सुनायी गई कहानी बच्चे को बहुत प्रभावित करती है। हमारे भाषाशास्त्रकारों ने कहा भी है कि कविता में माधुर्य गुण के साथ कांता सम्मत भाव होता है। इसके लिए शिक्षक को बस थोड़ा-सा शब्दों का चुनाव करना होता है और सुंदर-सी अभिव्यक्ति।

एक कहानी गद्य में देखिए-

एक था, चुन्नू, वह स्वभाव से बड़ा ही शैतान था। दूसरों को परेशान करना, झूठ बोलना, बहाने बनाना, स्कूल का काम पूरा न करना उसका रोज़ का काम था। वह कभी समय पर स्कूल नहीं आता था और ऊपर से शिक्षक और छात्रों पर रोब जमाता। शिक्षकों ने चुन्नू को बहुत समझाने का प्रयास किया, मगर वह नहीं माना। अब तो सभी उससे काफ़ी नाराज़ रहते, उसकी शिकायत करते। कभी-कभी शिक्षक उसकी पिटाई भी करते। कक्षा में उसके साथी भी उससे परेशान थे किंतु चुन्नू को इसकी कोई फिक्र नहीं थी। वह तो बस सारा दिन खेल-खेल में मगन रहता। परीक्षा पास आ रही थी, मगर चुन्नू को पढ़ाई की कोई चिंता नहीं थी। अंत में जब परीक्षा सिर पर आ गई, तब चुन्नू ने देखा, उसकी सारी कापियाँ खाली हैं। अब वो सबसे

मदद माँग रहा था। सब उससे बहुत परेशान थे। इसलिए किसी ने उसकी मदद नहीं की। जैसे-तैसे चुन्नू ने परीक्षा दी, मगर वही हुआ जो बिना मेहनत करने वाले के साथ होता है। चुन्नू फेल हो गया। अब उसे बहुत पछतावा हुआ। उसने भविष्य में ईमानदारी से पढ़ाई करने का सबक सीखा।

इसी कहानी को मैंने पद्य में कहने का प्रयास किया है। देखिए- **नटखट चुन्नू**

चुन्नू था, बड़ा ही नटखट
सबसे होती उसकी खटपट।
बात-बात पर झूठ वो कहता
होमवर्क वो कभी ना करता।
टीचर से फिर सज़ा वो पाता
पढ़ना उसे ज़रा ना भाता।
खेल-कूद में समय गँवाता
रात-दिन बस जुगत भिड़ाता।
आई अब परीक्षा की बारी
चुन्नू की थी, कॉपी खाली।
कैसे करे अब वो पढ़ाई
बात न ये समझ में आई।
बस सारा दिन खटता रहता
रह-रहकर सिर धुनता रहता।
कोई ना करता उसकी मदद
सबसे ही थी, उसकी अदावत।
पहुँचा जब परीक्षा हॉल
पेपर देख हुआ बेहाल।
प्रश्न एक न उसको आया
परिणाम उसका ज़ीरो आया।
बात चुन्नू के समझ में आई
मन लगा अब करता पढ़ाई।
बच्चो! तुम न समय गँवाना
वरना पीछे पड़ेगा पछताना।

दूसरी कहानी पद्य में देखिए-

कोई बड़ा ना कोई छोटा

हाथी-चींटी की तकरार सुनो
अरे! हुई क्या बात सुनो।

हाथी आ रहा इधर से
चींटी आ रही उधर से।
हाथी बोला, चींटी हट जा
बोली चींटी, बाजू से निकल जा।
बात-बात में बात बढ़ी
चींटी, हाथी में खूब ठनी।
हाथी को फिर गुस्सा आया
उसने अपना रूप दिखाया।
बोला, चींटीं की यह औकात
मारूँ फूँक पहुँचे खंभात।
अब चींटी-हाथी में ठन गई
बात चींटी के दिल में लग गई।
सबका अपना मान है, होता
देख, अब तू मेरा तमाशा।
चींटी तुर-तुर चलती आई
झट हाथी की सूँड समाई।
चींटी चुट-चुट काट रही थी

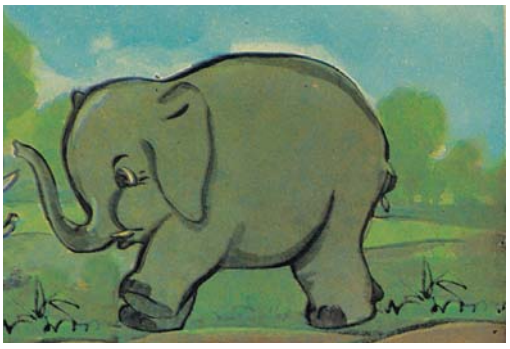

हाथी की अब वाट लगी थी।
हाथी तड़प-तड़प चिल्लाए
पड़ा जमीं पर लोट लगाए।
बोला, चींटी दीदी! बाहर आ जा
गलती हो गई माफ़ी दे जा।
चींटी धीरे से बाहर आई
बात हाथी की समझ में आई।
कोई न छोटा न कोई बड़ा है
जग में सबका मान बड़ा है।

यह कहानी इन दो बिल्कुल विरोधी पात्रों प्रतीक के माध्यम से एक सूत्र वाक्य बच्चों तक पहुँचाने का प्रयास करती है यह कहानी कि हमें कभी भी किसी को मात्र आकार से छोटा या बड़ा नहीं समझना चाहिए। बल्कि गुण का सम्मान करना चाहिए। इसके साथ ही इस कहानी को सही मुद्रा में बच्चों के सामने कहें। जैसे- 'हाथी को फिर गुस्सा आया' (मोटी और कड़क आवाज़), हाथी के चलने का अंदाज (रोबदार), चींटी के चलने का अंदाज़ (सहमा-सा तुर-तुर), हाथी पड़ा चिल्लाए, गलती हो गई माफ़ी दे जा (हाथ जोड़ गिड़गिड़ाते हुए) इस तरह पूरे भाव के साथ हम कहानी को बड़े ही रोचक अंदाज़ में बच्चों को सुना सकते हैं।

कहने का तात्पर्य है कि कहानी गद्य के साथ पद्य में भी कही जा सकती है। बस इसके लिए थोड़े से कौशल की आवश्यकता है। शिक्षकों को भी चाहिए कि वे इसके साथ पूरी ईमानदारी बरतें। वे कहानी कहें, पढ़े नहीं। वे करुणा, क्रोध, सहानुभूति, भय, पीड़ा आदि भावों को सही अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत करें। निश्चिय ही यह कहानी बच्चों के दिल में प्रभाव उत्पन्न करेगी।

❑❑❑